नं. 1

संजीव®

बुक्स

अनिवार्य हिन्दी-XII

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए

पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2026 के प्रश्न-पत्र का समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा जारी प्रश्न बैंक के प्रश्नों का हल सहित समावेश
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2027

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 360/-

- प््रकाशक :

संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- **मूल्य : ₹ 360.00**

- लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर
प्रदीप कम्प्यूटर, जयपुर

- मुद्रक :

मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर
★★★★★★★

- ❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- ❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- ❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

अनिवार्य हिन्दी–कक्षा 12

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न–पत्र	समय (घण्टे)	प्रश्न–पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	12
रचनात्मक लेखन	18
व्यावहारिक व्याकरण	08
पाठ्यपुस्तक : **आरोह** (भाग–2)	31
पाठ्यपुस्तक : **वितान** (भाग–2)	11

खण्ड–1

अपठित बोध **12 अंक**

(1) अपठित गद्यांश (तीन बहुचयनात्मक एवं तीन अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6 अंक

(2) अपठित पद्यांश (तीन बहुचयनात्मक एवं तीन अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6 अंक

खण्ड–2

रचनात्मक लेखन **18 अंक**

(1) निबन्ध लेखन (विकल्प सहित) (300 शब्द) 5 अंक

(2) पत्र व प्रारूप लेखन (अर्द्धशासकीय–पत्र, निविदा, विज्ञप्ति, ज्ञापन, अधिसूचना) (विकल्प सहित) 5 अंक

अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित–

(3) विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित दो बहुचयनात्मक एवं एक लघूत्तरात्मक प्रश्न (लगभग 40 शब्द) 4 अंक

(4) विशेष लेखन—स्वरूप और प्रकार (एक लघूत्तरात्मक प्रश्न–लगभग 40 शब्द) 2 अंक

(5) कहानी का नाट्य रूपांतरण/रेडियो नाटक (एक लघूत्तरात्मक प्रश्न–लगभग 40 शब्द) 2 अंक

व्यावहारिक व्याकरण **8 अंक**

(दो बहुचयनात्मक एवं छः रिक्त स्थान पूर्ति के प्रश्न)

(1) भाषा, व्याकरण एवं लिपि का परिचय 2 अंक

(2) शब्द शक्ति 2 अंक

(3) अलंकार–अनुप्रास, श्लेष, यमक, वक्रोक्ति, विरोधाभास, अतिशयोक्ति, विभावना, संदेह, भ्रांतिमान 2 अंक

(4) पारिभाषिक शब्दावली 2 अंक

खण्ड-3

पाठ्यपुस्तक–आरोह-भाग 2 **31 अंक**

(1) 1 सप्रसंग व्याख्या गद्य भाग से (विकल्प सहित) 4 अंक

(2) 1 सप्रसंग व्याख्या पद्य भाग से (विकल्प सहित) 4 अंक

(3) किसी एक कवि या लेखक का परिचय (विकल्प सहित) (60-80 शब्दों में उत्तर) 3 अंक

(4) गद्य भाग से तीन बहुचयनात्मक, दो अतिलघूत्तरात्मक (लगभग 20 शब्द प्रत्येक), एक लघूत्तरात्मक (लगभग 40 शब्द) एवं विकल्प सहित एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (60-80 शब्दों में उत्तर) 10 अंक

(5) पद्य भाग से तीन बहुचयनात्मक, दो अतिलघूत्तरात्मक (लगभग 20 शब्द प्रत्येक), एक लघूत्तरात्मक (लगभग 40 शब्द) एवं विकल्प सहित एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (60-80 शब्दों में उत्तर) 10 अंक

खण्ड-4

पाठ्यपुस्तक–वितान भाग 2 **11 अंक**

(1) एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) (60-80 शब्दों में उत्तर) 3 अंक

(2) दो लघूत्तरात्मक प्रश्न (लगभग 40 शब्द प्रत्येक) 4 अंक

(3) दो बहुचयनात्मक एवं दो अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (लगभग 20 शब्द प्रत्येक) 4 अंक

निर्धारित पुस्तकें–

1. **आरोह-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **वितान-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति एवं माध्यम**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

आरोह भाग-2

काव्य-खण्ड

1.	हरिवंश राय बच्चन	1-14
2.	आलोक धन्वा	15-24
3.	कुँवर नारायण	24-36
4.	रघुवीर सहाय	36-47
5.	शमशेर बहादुर सिंह	47-55
6.	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	55-66
7.	गोस्वामी तुलसीदास	66-81
8.	फिराक गोरखपुरी	81-88
9.	उमाशंकर जोशी	88-96

गद्य-खण्ड

10.	भक्तिन	(महादेवी वर्मा)	97-114
11.	बाजार दर्शन	(जैनेन्द्र कुमार)	114-133
12.	काले मेघा पानी दे	(धर्मवीर भारती)	134-147
13.	पहलवान की ढोलक	(फणीश्वरनाथ 'रेणु')	147-161
14.	शिरीष के फूल	(हजारी प्रसाद द्विवेदी)	161-176
15.	(i) श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा		
	(ii) मेरी कल्पना का आदर्श समाज	(बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर)	176-191

वितान भाग-2

1.	सिल्वर वैडिंग	(मनोहर श्याम जोशी)	192-208
2.	जूझ	(आनन्द यादव)	208-223
3.	अतीत में दबे पाँव	(ओम थानवी)	223-236

अपठित बोध

1.	अपठित काव्यांश	237-265
2.	अपठित गद्यांश	265-290

रचनात्मक लेखन

1. निबन्ध-लेखन **291-348**

1. प्रौद्योगिकी से संबंधित

1. साइबर अपराध का फैलता जाल : एक डिजिटल चुनौती 292
2. कृत्रिम बुद्धिमता का वर्तमान स्वरूप

अथवा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) : वरदान या अभिशाप 293

3. ऑनलाइन शॉपिंग 294

4. सामाजिक संचार माध्यमों (सोशल मीडिया) का बढ़ता दुरुपयोग 295

5. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप

अथवा

मोबाइल फोन : छात्र के लिए वरदान या अभिशाप 296

6. कम्प्यूटर शिक्षा–आधुनिक समय की आवश्यकता

अथवा

कम्प्यूटर शिक्षा की उपयोगिता 297

7. 'इलेक्ट्रोनिक मीडिया और हमारा समाज'

अथवा

संचार-क्रान्ति और समाज 297

8. आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी

अथवा

सूचना-क्रान्ति के युग में भारत 298

9. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम 299

10. इन्टरनेट–सूचना क्रान्ति

अथवा

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए इन्टरनेट की आवश्यकता 300

11. मानव के लिए विज्ञान : वरदान या अभिशाप 301

2. सामाजिक चुनौतियों एवं समस्याओं से संबंधित

12. वैवाहिक उत्सवों में बढ़ता दिखावा 301

13. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 302

14. घटते रोजगार–बढ़ती बेरोजगारी

अथवा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में बेरोजगारी की समस्या 303

15. मानवता के लिए चुनौती–कन्या-भ्रूण-हत्या

अथवा

कन्या-भ्रूण हत्या : लिंगभेद का अपराध 304

16. दहेज-दानव

अथवा

समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 304

17. बढ़ती सड़क दुर्घटनाएँ; कारण और निवारण

अथवा

वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 305

18. खाद्य-पदार्थों में मिलावट और भारतीय समाज

अथवा

मिलावटी माल का बढ़ता कारोबार 306

19. महँगाई : समस्या और समाधान
अथवा
महँगाई की मार : जीवन बेहाल 307
20. भ्रष्टाचार का महादानव
अथवा
भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या 308
21. बाल-विवाह : सामाजिक अभिशाप 309

3. राजस्थान से संबंधित

22. राजस्थान का समृद्ध भौतिक परिदृश्य 309
23. राजस्थान की सतरंगी संस्कृति 310
24. राजस्थान के पर्यटन-स्थल
अथवा
राजस्थान में पर्यटन की सम्भावनाएँ
अथवा
राजस्थान और पर्यटन की सम्भावनाएँ 311
25. राजस्थान के प्रसिद्ध मेले
अथवा
राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 311
26. राजस्थान का अकाल 312
27. राजस्थान के लोकगीत 313
28. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 313

4. शिक्षा से संबंधित

29. शिक्षा का अधिकार
अथवा
अनिवार्य बाल-शिक्षा का अधिकार 314
30. बालिका शिक्षा 315
31. सर्व शिक्षा अभियान
अथवा
साक्षरता अभियान के बढ़ते कदम 316
32. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सैनिक शिक्षा 316
33. वर्तमान शिक्षा और सदाचार
अथवा
वर्तमान शिक्षा-प्रणाली : गुण और दोष 317

5. विद्यार्थियों एवं युवाओं से संबंधित

34. Gen-Z (जेन जी) : आधुनिक युग की नई पहचान और चुनौतियाँ 318
35. विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन की महत्ता
अथवा
अनुशासन का महत्त्व 319
36. नये भारत की आशा-युवावर्ग

अथवा

युवा शक्ति एवं चुनौतियाँ 319

37. विद्यार्थी और वर्तमान राजनीति 320

38. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता

अथवा

नैतिक शिक्षा की महती आवश्यकता 321

39. मेरा पहला शैक्षणिक भ्रमण 322

6. महिलाओं से संबंधित

40. नारी शिक्षा : आज की आवश्यकता

अथवा

नारी-शिक्षा का महत्त्व 322

41. महिला सशक्तिकरण

अथवा

महिला सशक्तिकरण एवं शिक्षा 323

42. समाज-निर्माण में नारी की भूमिका

अथवा

समाज में नारी का योगदान 324

7. भारत से संबंधित

43. ऑपरेशन सिन्दूर : भारत का गौरव 325

44. विकसित भारत-रोजगार एवं आजीविका गारंटी मिशन (ग्रामीण) (VB-G RAM G) 326

45. 'मेक इन इंडिया' अभियान

अथवा

मेक इन इंडिया अथवा स्वदेशी उद्योग 327

46. स्वास्थ्य रक्षा : आयुष्मान भारत योजना

अथवा

स्वास्थ्य ही श्रेष्ठ धन है 327

47. आत्मनिर्भर भारत 328

48. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग

अथवा

योग : स्वास्थ्य की कुंजी

अथवा

योग भगाए रोग 329

49. स्वच्छता का महत्त्व 330

50. राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व

अथवा

राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व 330

51. वर्तमान की महती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता

अथवा
राष्ट्रीय और भावात्मक एकता
अथवा
राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 331
52. भारत में लोकतन्त्र–मेरी दृष्टि में
अथवा
भारत में जनतन्त्र का भविष्य 332
53. इक्कीसवीं सदी की कल्पनाएँ व सम्भावनाएँ
अथवा
मेरे सपनों का भारत 333
54. नदी जल स्वच्छता अभियान 333

8. अन्तर्राष्ट्रीय संबंधित

55. टैरिफ वार का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रभाव 334
56. बढ़ता अन्तर्राष्ट्रीय तनाव और बिगड़ते रिश्ते
अथवा
'तृतीय विश्व युद्ध की ओर बढ़ता विश्व' 335
57. आतंकवाद : वैश्विक क्षितिज पर
अथवा
आतंकवाद : समस्या एवं समाधान 335

9. पर्यावरण से संबंधित

58. वृक्षारोपण महाअभियान 336
59. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन
अथवा
प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 337
60. पर्यावरण प्रदूषण
अथवा
पर्यावरण संरक्षण : प्रदूषण नियंत्रण 338
61. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक
अथवा
पर्यावरण संरक्षण और युवा 338
62. कटते जंगल : घटता मंगल 339

10. अन्य/विविध

63. हमारे पारंपरिक खेल 340
64. मातृभाषा और उसका महत्त्व 340
65. हमारे बुजुर्ग–हमारी धरोहर 341
66. बाढ़ का दृश्य 342
67. भारत की ऋतुएँ 342
68. मेरा प्रिय कवि

अथवा
मेरा प्रिय साहित्यकार : गोस्वामी तुलसीदास 343
69. हमारे महाकाव्य 344
70. पर्वतीय क्षेत्र की मेरी यात्रा
अथवा
मेरी अविस्मरणीय यात्रा 344
71. अतिवृष्टि का वह दिन
अथवा
जब गाँव में भीषण वर्षा हुई 345
72. समाज में जीवन मूल्यों का महत्त्व 346
73. समाचार-पत्र
अथवा
समाचार-पत्रों का महत्त्व 346
74. जल-संरक्षण : हमारा दायित्व
अथवा
जल है तो जीवन है 347
75. मनोरंजन के आधुनिक साधन 348

2. पत्र एवं प्रारूप लेखन (अर्द्ध शासकीय पत्र, निविदा, विज्ञप्ति, ज्ञापन, अधिसूचना) 349-380
3. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन 381-394
4. विशेष लेखन—स्वरूप और प्रकार 395-399
5. कहानी का नाट्य रूपान्तरण 400-403
6. रेडियो नाटक 404-406

व्यावहारिक व्याकरण

(1) भाषा, व्याकरण एवं लिपि का परिचय 407-415
(2) शब्द-शक्ति 415-424
(3) अलंकार 424-438
(4) पारिभाषिक शब्दावली 438-447

❑❑❑

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2026

हिन्दी (अनिवार्य)

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
(2) **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
(3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
(4) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
(5) प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-अ

1. **निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए।** **[1×12=12]**

(i) चूरणवाले भगत जी चूरण बेचकर एक दिन में अधिकतम कितने पैसे कमाते हैं? [1]
(अ) चार आने (ब) छह आने (स) आठ आने (द) बारह आने

(ii) 'पहलवान की ढोलक' पाठ में 'उठा पटक दे' के अर्थ को प्रकट करने वाली ढोल की ध्वनि इनमें से कौन-सी थी? [1]
(अ) ढाक्-ढिना (ब) चट्-गिड़-धा (स) धा-गिड़-गिड़ (द) चटाक्-चट-धा

(iii) अंबेडकर के विख्यात भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ़ कास्ट' का हिन्दी रूपांतर किस शीर्षक से किया गया? [1]
(अ) जाति-भेद का उच्छेद (ब) जाति-भेद का परिच्छेद
(स) जाति-भेद का विच्छेद (द) जाति-भेद का परिशिष्ट

(iv) हरिवंशराय बच्चन का काव्य दर्शन है— [1]
(अ) छायावाद (ब) हालावाद (स) प्रगतिवाद (द) प्रयोगवाद

(v) निराला की 'बादल राग' कविता किस काव्य खंड में प्रकाशित है? [1]
(अ) अणिमा (ब) परिमल (स) अनामिका (द) बेला

(vi) "अर्ध राति गइ कपि नहीं आयउ।" तुलसीदास ने इस पंक्ति में कपि कहकर किसे संबोधित किया है? [1]
(अ) बालि (ब) सुग्रीव (स) अंगद (द) हनुमान

(vii) 'सिल्वर वेडिंग' कहानी में बाल-जती किसे कहा गया है? [1]
(अ) यशोधर पंत को (ब) भूषण को (स) किशनदा को (द) गिरीश को

(viii) 'जूझ' कहानी के नायक पर सर्वाधिक प्रभाव किसका पड़ा? [1]
(अ) रणनवरे गुरुजी का (ब) मंत्री गुरुजी का
(स) वसंत पाटिल का (द) सौंदलगेकर गुरुजी का

(ix) जनसंचार के किस माध्यम में सर्वाधिक ज्ञानेन्द्रियाँ सक्रिय रहती हैं? [1]
(अ) समाचार पत्र में (ब) रेडियो में (स) इंटरनेट में (द) पत्रिकाओं में

(x) भारत में वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किसे जाता है? [1]
(अ) तहलका डॉटकॉम (ब) इंडियाइंफोलाइन (स) सीफी (द) रीडिफ़

(xi) इनमें से पश्चिमी हिन्दी की बोली है— [1]
(अ) मगही (ब) बुंदेली (स) बघेली (द) मेवाती

(xii) इनमें से किस भाषा की लिपि देवनागरी है? [1]
(अ) नेपाली (ब) उर्दू (स) पंजाबी (द) अंग्रेजी

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **[1×6=6]**

(i) शब्द शक्तियाँ .... प्रकार की होती हैं। [1]

(ii) रजनीगंधा खिल गयी। वाक्य में .... शब्द शक्ति है। [1]

(iii) "नाक का मोती अधर की कांति से।
बीज दाड़िम का समझकर भ्रांति से॥" पंक्ति में .... अलंकार है। [1]

(iv) जब काव्य में प्रयुक्त एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न संदर्भों में भिन्न-भिन्न अर्थ निकले वहाँ पर .... अलंकार होता है। [1]

(v) अनुज्ञेय शब्द के लिए अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द .... है। [1]

(vi) TRUST शब्द के लिए उपयुक्त हिन्दी पारिभाषिक शब्द .... है। [1]

3. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। **[1×6=6]**

हे मातृभूमि! हमको वर दो, पढ़-लिखकर हम गुनना सीखें।
बोले न बुरा, देखे न बुरा, कुछ भी बुरा न सुनना सीखें।
हम खेल-खेल में पढ़ते जाएँ, पढ़-लिखकर नित बढ़ते जाएँ।
हम रुके नहीं, हम झुके नहीं, गिरी-शिखरों पर चढ़ते जाएँ।
विघ्नों से कभी न घबराएँ, सतपंथ को कभी न छोड़े हम।
बाधाओं पर बाधा आएँ, बाधाओं का रूख मोड़ें हम।
क्यों बने फ़कीर लकीरों के, नित नए सपने बुनना सीखें।
हे मातृभूमि! हमको वर दो, पढ़-लिखकर हम गुनना सीखें।

(i) पद्यांश में किससे नहीं घबराने की बात की जा रही है? [1]
(अ) आँधी (ब) प्रशंसा (स) विघ्नों से (द) निंदा

(ii) पद्यांश में प्रयुक्त 'गुनना' शब्द का अर्थ है— [1]
(अ) गिनना (ब) सफल होना (स) मनन करना (द) व्यवसाय करना

(iii) इनमें से 'गिरी' शब्द का पर्यायवाची शब्द है— [1]
(अ) निर्झर (ब) अचल (स) सरिता (द) हिमानी

(iv) पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। [1]

(v) "क्यों बने फ़कीर लकीरों के" पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है? [1]

(vi) पद्यांश में कवि क्या-क्या नहीं करने की सीख दे रहा है? [1]

4. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। **[1×6= 6]**

जीवित रहना स्वयं एक कर्म है, जो जीवित है, वह कर्म करेगा ही। कर्म रहित स्थिति मृत्यु है। महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि हर मनुष्य को अपने स्वभाव और योग्यता के अनुसार अथवा यों कहो कि स्वधर्मानुसार कर्म का चयन करने में स्वतंत्रता होनी चाहिए। जो कर्म मनुष्य की योग्यता और स्वभाव के अनुकूल होगा, वही उसके लिए शुभ भी होगा। उसी कर्म को पवित्र नि:स्वार्थ भाव से करना अपने साथ मित्रता निभाना है। जो अपने से मित्रता करता है वह दूसरों को भी प्रिय हो जाता है।

(i) कर्म रहित स्थिति है— [1]
(अ) जीवन की (ब) मृत्यु की (स) कर्मनिष्ठा की (द) श्रमनिष्ठा की

(ii) गद्यांश में प्रयुक्त स्वधर्मानुसार शब्द में संधि है— [1]
(अ) दीर्घ संधि (ब) गुण संधि (स) वृद्धि संधि (द) यण् संधि

(iii) कौन-सा मनुष्य दूसरों को भी प्रिय हो जाता है? [1]
(अ) जो नि:स्वार्थ भाव से व्यवहार नहीं करता है (ब) जिसका स्वभाव सहृदयता के प्रतिकूल हो
(स) जो स्वयं से मित्रता करता है (द) जिसमें योग्यता का दर्प हो

(iv) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। [1]

(v) मनुष्य को क्या करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। [1]

(vi) मनुष्य की स्वयं से मित्रता निभाने की क्या कसौटी है? [1]

5. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर 20 शब्दों में लिखिए। [1×6=6]

(i) बच्चों को छतों के खतरनाक किनारों से गिरने से कौन बचाता है? [1]

(ii) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में साक्षात्कार कर्ता कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए क्या करना चाहता है? [1]

(iii) बाज़ार का जादू किस राह से काम करता है? [1]

(iv) 'पहलवान की ढोलक' पाठ में नए राजकुमार के राज्य प्रबंधन अपने हाथ में लेने पर दंगल का स्थान किस खेल ने ले लिया? [1]

(v) लड़कों के मन में कौन-से गुरुजी की दहशत बैठी हुई थी? [1]

(vi) यशोधर बाबू की पत्नी के चचेरे भाई का क्या नाम था? [1]

खण्ड-ब

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर 40 शब्दों में दीजिए। [2×7=14]

6. जनसंचार के मुद्रित माध्यम का संक्षिप्त विवरण लिखिए। [2]

7. बीट रिपोर्टिंग क्या है? स्पष्ट कीजिए। [2]

8. रेडियो नाटक के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। [2]

9. लुट्टन पहलवान ने अपनी मृत्यु के संबंध में क्या कहा था? [2]

10. "देख आईने में चाँद उतर आया है।" पंक्ति का प्रतीकार्थ लिखिए। [2]

11. 'जूझ' कहानी के अनुसार ईख की अच्छी कीमत कब मिल जाती थी? [2]

12. यशोधर बाबू को उनके बेटे ने क्या गिफ्ट दिया और क्यों? [2]

खण्ड-स

निम्नलिखित दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर 60 से 80 शब्दों में दीजिए।

13. 'कुँवर नारायण' का साहित्यिक परिचय लिखिए। [3]

अथवा

'हजारी प्रसाद द्विवेदी' का साहित्यिक परिचय लिखिए।

14. 'छोटा मेरा खेत' कविता काव्य रचना और कृषि कर्म की प्रभावी तुलना करती है। कथन की समीक्षा कीजिए। [3]

अथवा

'उषा' कविता में व्यक्त प्राकृतिक सौंदर्य की विवेचना कीजिए।

15. वैज्ञानिक तर्क पर लोक मान्यताएँ हावी रहती हैं। 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आलोक में कथन की समीक्षा कीजिए। [3]

अथवा

अंबेडकर की कल्पना के आदर्श समाज का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

16. "सिल्वर वेडिंग पाठ पीढ़ी-अंतराल की समस्याओं का ज्वलंत चित्र प्रस्तुत करता है।" उक्त कथन की समीक्षा कीजिए। [3]

अथवा

मुअनजो-दड़ो सभ्यता की विशेषताओं का चित्रण कीजिए।

17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। [4]

जब वह कोयले की मोटी रेखा से अपने साम्राज्य की सीमा निश्चित कर चौके में प्रतिष्ठित हुई, तब मैंने समझ लिया कि इस सेवक का साथ टेढ़ी खीर है। अपने भोजन के संबंध में नितांत वीतराग होने पर भी मैं पाक-विद्या के लिए परिवार में प्रख्यात हूँ और कोई भी पाक-कुशल दूसरे के काम में नुक्ताचीनी बिना किए रह नहीं सकता। पर जब छूत-पाक पर प्राण देनेवाले व्यक्तियों का, बात-बात पर भूखा मरना स्मरण हो आया और भक्तिन की शंकाकुल दृष्टि में छिपे हुए निषेध का अनुभव किया, तब कोयले की रेखा मेरे लिए लक्ष्मण के धनुष से खींची हुई रेखा के समान दुर्लंघ्य हो उठी।

अथवा

इन बातों को आज पचास से ज़्यादा बरस होने को आए पर ज्यों-की-त्यों मन पर दर्ज हैं। कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर, अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार का अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं। आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?

खण्ड-द

18. **निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।** **[4]**

अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं!
धनी, वज्र-गर्जन से बादल!
त्रस्त-नयन मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, हे शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!

अथवा

सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई॥
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥
सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा॥
अस बिचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता॥
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना॥
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥

19. जिला खेल अधिकारी, जिला पाली राजस्थान द्वारा खेल सामग्री की आपूर्ति हेतु निर्धारित प्रपत्र में एक निविदा लिखिए। [5]

अथवा

आयुक्त, नगर निगम अलवर की तरफ से राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में रैली आयोजित करने हेतु निर्धारित प्रपत्र में एक ज्ञापन लिखिए।

20. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में एक निबन्ध लिखिए। [5]

(i) इलेक्ट्रोनिक मीडिया और हमारा समाज
(ii) मेरे सपनों का भारत
(iii) हमारे पारंपरिक खेल
(iv) राजस्थान का समृद्ध भौतिक परिदृश्य।

अनिवार्य हिन्दी कक्षा 12

आरोह भाग-2

काव्य-खण्ड

1. हरिवंश राय बच्चन

कवि परिचय—आधुनिक हिन्दी साहित्य में हालावाद के प्रवर्तक डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन' का जन्म सन् 1907 ई. को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता का नाम प्रतापनारायण और माता का नाम सरस्वती देवी था। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे, फिर आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से सम्बद्ध तथा विदेश मन्त्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे। सन् 1966 में राज्यसभा के लिए राष्ट्रपति द्वारा नामित हुए। इसी वर्ष इन्हें 'सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार' मिला। सन् 1969 में 'दो चट्टानें' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। सन् 1976 में इन्हें 'पद्मभूषण' तथा सन् 1992 में 'सरस्वती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। जनवरी सन् 2003 में मुम्बई में इनका निधन हुआ।

कवि हरिवंश राय बच्चन का कृतित्व अतीव महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इनकी प्रमुख रचनाओं के नाम हैं— मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमन्त्रण, आकुल-अन्तर, एकान्त संगीत, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नये-पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ (काव्य-संग्रह); क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक (आत्मकथा चार खण्ड) तथा प्रवास की डायरी आदि। बच्चनजी के समस्त वाङ्मय को 'बच्चन ग्रन्थावली' नाम से दस खण्डों में प्रकाशित किया गया है।

कविता-परिचय—प्रस्तुत पाठ में हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित 'आत्म-परिचय' कविता 'निशा-निमन्त्रण' काव्य-संग्रह का एक गीत संकलित है। इस गीत में यह प्रतिपादित किया गया है कि अपने को जानना दुनिया को जानने से भी अधिक कठिन है। समाज से व्यक्ति का सम्बन्ध खट्टा-मीठा तो होता ही है, जग-जीवन से पूरी तरह निरपेक्ष रहना सम्भव नहीं है। व्यक्ति को चाहे दूसरों के आक्षेप कष्टकारी लगें, परन्तु अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है। सांसारिक द्विधात्मक सम्बन्धों के रहते हुए भी व्यक्ति जीवन में सामंजस्य स्थापित कर सकता है। पाठ में संकलित 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' गीत में कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने जीवन के अकेलेपन की कुण्ठा अभिव्यक्त की है। यात्रा-पथ पर चलता हुआ पथिक 'अब मंजिल पास ही है' ऐसा सोचकर अधिक तेजी से चलने लगता है। वह सोचता है कि घर पर लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, इससे उसके कदमों की गति बढ़ जाती है। लेकिन जब कवि का जीवन एकाकी हो, तो वह किसके लिए ऐसी उत्कण्ठा रखेगा? कवि ने इसमें अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद के कुण्ठामय जीवन का चित्रण करते हुए यह सन्देश दिया है कि जीवन में लक्ष्य-प्राप्ति हेतु संघर्ष करने से उत्साह बढ़ता है, परन्तु प्रेम के अभाव में निराशा और दुर्बलता आती है।

कठिन शब्दार्थ एवं सप्रसंग व्याख्याएँ

1. आत्म-परिचय

(1)

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

कठिन-शब्दार्थ–झंकृत = झनझनाकर बजना। **तार** = तारों का बाजा वीणा आदि। **स्नेह-सुरा** = प्रेम रूपी शराब।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। इसमें कवि ने अपनी जीवन-शैली का परिचय दिया है कि वह किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन में स्नेह-भार लिये घूमते हैं।

व्याख्या–कवि कहता है कि मैं इस सांसारिक जीवन का भार अपने ऊपर लिये हुए फिरता रहता हूँ। किसी प्रिय ने मेरे हृदय की कोमल भावनाओं का स्पर्श करके (हृदय रूपी वीणा के तारों से) इसे झंकृत कर दिया है। इस तरह मैं अपनी साँसों के दो तार लिये हुए जग-जीवन में फिरता रहता हूँ।

कवि बच्चन कहते हैं कि मैं प्रेमरूपी शराब को पीकर मस्त रहता हूँ। इसी मस्ती में इस बात का विचार कभी नहीं करता हूँ कि लोग मेरे सम्बन्ध में क्या कहते हैं। मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता हूँ। यह संसार तो उन्हें पूछता है, अर्थात् प्रशंसा करता है जो उनके कहने पर चलते हैं, उनके अनुसार गाते हैं। किन्तु मैं अपने मन की भावनाओं के अनुसार गाता हूँ तथा कविता में अपने ही मनोभावों को अभिव्यक्ति देता हूँ।

विशेष–(1) कवि ने इसमें अपने जीवन के सुख-दु:ख व प्रेम के दायित्व का भार स्वयं उठाये चलने को कहते हैं। साथ ही स्वयं के मनानुसार चलने की बात कहते हैं।

(2) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है। रूपक व अनुप्रास अलंकारों की सहज अभिव्यक्ति हुई है। प्रसाद गुण का प्रयोग है। कोमलकान्त शब्दावली का प्रयोग है।

(2)

मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!

कठिन-शब्दार्थ–निज = अपना। **उर** = हृदय। **उद्‌गार** = हृदय के भाव।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। जिसमें कवि ने स्वयं के जीवन-शैली तथा संसार के व्यवहार का परिचय दिया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि मैं अपने हृदय में नये-नये भाव रखता हूँ। मैं अपने ही हृदय द्वारा दिये गए उपहारों (सुख-दु:ख) को लिये घूमता रहता हूँ। मैं उन्हीं मनोभावों को लेकर उड़ता-घुमड़ता रहता हूँ। मैं किसी अन्य के इशारे पर नहीं चलता, मैं अपने हृदय की भावना को ही श्रेष्ठ भेंट मानकर अपनाता रहता हूँ। मुझे यह सारा संसार अधूरा लगता है, इसमें प्रेम का अभाव-सा है। यह इसी कारण मुझे अच्छा नहीं लगता है। मेरे मन में प्रेममय सुन्दर सपनों का संसार है और उसी को लेकर मैं आगे बढ़ता रहता हूँ, अर्थात् मैं अपनी भावनाओं के अनुसार प्रेममय संसार की रचना करता रहता हूँ।

विशेष–(1) कवि संसार की रीतियों से अलग स्वयं के सुख-दु:ख एवं प्रेम में मग्न रहने का भाव प्रकट करते हैं। उनका कवित्व संसार ही उनका जीवन है।

(2) हिन्दी खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। भव-सागर में रूपक अलंकार का प्रयोग है। कोमलकान्त शब्दावली एवं प्रसाद गुण का प्रयोग हुआ है। तुकान्त व गेयता प्रमुख गुण है।

(3)

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ!
मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,